[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3249

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में समाज की भूमिका

रानू उपाध्याय
मातुश्री अहिल्यादेवी टीचर्स एज्युकेशन इंस्टीट्यूट, सुल्लाखेड़ी, इन्दौर

प्रस्तावना

भारतवर्ष में प्राचीन शास्त्रों, वेद–पुराणों में, धर्म ग्रन्थो में तथा ऋषि–मुनियों ने पर्यावरण की शुद्धता पर अधिक बल दिया है । वेदों में प्रकृति प्रदत्त पर्यावरण को देवता मानकर कहा गया है कि–

''यो देवोग्नों यो प्सु चो विश्वं भुव नमा विवेश,
यो औषधिषु, यो वनस्पतिषु तस्में देवाय नमो नमः''

अर्थात जो सृष्टि, अग्नि, जल, आकाश, पृथ्वी, और वायु से आच्छादित है तथा जो औषधियों एवं वनस्पतियों में विद्यमान है । उस पर्यावरण देव को हम नमस्कार करते है ।

प्रकृति मानव पर अत्यंत उदार रही है । पृथ्वी पर अपने उद्भव के बाद से ही मानव अपने अस्तित्व के लिये प्रकृति पर निर्भर रहा है । मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों की आवश्यकता होती है इन संसाधनों द्वारा ही मानव की मूलभूत आवश्यकताएं रोटी, कपड़ा एवं मकान की पूर्ति होती है । इन साधनों के अभाव में सुखद मानव जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है ।

प्रकृति से प्राप्त होने वाले पदार्थ, जो प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मानव की खुशहाली के लिये उपयोग किये जाते है, 'प्राकृतिक संसाधन' कहलाते है । मनुष्य के जीवित, स्वस्थ्य व प्रसन्न रहना प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता तथा पुनः परिसंचरण पर निर्भर करता है। संसाधन को अंग्रेजी में 'त्मेवनतबम' कहते है । यहां 'त्म'का अर्थ 'पुनः' तथा 'वनतबम' का अर्थ 'उपाय', 'साधन' या 'स्त्रोत' से है ।

अतः प्राकृतिक संसाधनों का सामान्य अर्थ उन साधनों से लिया जाता है जो कि मानव के विकास एवं आवश्यकता की पूर्ति में बार–बार सहायता करती है । उदाहरणार्थ– सूर्य का प्रकाश प्रत्येक दिन मानव शरीर को विटामिन 'डी' प्रदान करता है तथा फसल, पौधे एवं वृक्षों को सहायता प्रदान करता है । इसी प्रकार प्रकृति ने मानव को उनेक वस्तुएं उपहार के रूप में दी है । प्रकृति के द्वारा निःशुल्क रूप से प्रदान वस्तुएं 'प्राकृतिक संसाधन' कहलाती है । जैसे–वायु, जल, भूमि, खनिज, ताप, प्रकाश, मिट्टी, जलवायु व तेल आदि। प्राकृतिक संसाधनों से आशय उनके अधिकतम सदुपयोग एवं मानव कल्याण में लाभ के लिये है । इसके लिए कुशल प्रबंध की आवश्यकता है, ताकि उपस्थिति संसाधन लम्बे समय तक अधिक लोगों की आवश्यकता की पूर्ति कर सकें ।

एली महोदय ने संरक्षण के बारे में लिखा है कि ''संरक्षण वर्तमान पीढ़ी का भावी पीढ़ी के लिये त्याग है ।'' यद्यपि मानव प्राचीन काल से ही संसाधन संरक्षण के संबंध में विचार करता रहा है किन्तु वर्तमान संरक्षण की संकल्पना एवं उसको कार्यरूप देने का क्रम बीसवी शताब्दी के अंतिम दो दशकों की देन है । संसाधन संरक्षण के विचार का प्रारंभ सर्वप्रथम संयुक्त राज्य अमेरिका में हुआ यह कार्य केवल अमेरिका में नहीं अपितु यूरोप एवं अन्य विकसित देशों में प्रारंभ होकर शीघ्र ही 'संरक्षण आंदोलन' के रूप में सम्पूर्ण विश्व में फैल गया क्योंकि विकास के साथ जो पर्यावरण का संकट उत्पन्न हुआ, उससे आज प्रत्येक राष्ट्र पर्यावरण के प्रति सचेष्ट है ।

प्रमुख प्राकृतिक संसाधन जैसे वन संसाधन, मृदा संसाधन, जल संसाधन, खनिज एवं उर्जा संसाधन के संरक्षण हेतु विभिन्न स्तरों पर प्रयास किये जा रहे है । वन ससांधन संरक्षण हेतु वनों की नियंत्रित व उचित विधि से कटाई, वनो का आग से बचाव, कृषि एवं आवास हेतु वनों के विनाश पर रोक, वनरक्षण, बांधों से वनों के

जलमग्न होने से बचाव, पुनः वन लगाने अर्थात वृक्षारोपण करना आदि उपाय आवश्यक है । वन संरक्षण एवं वृक्षारोपण जैसे कार्यक्रम माग सरकारी नियमों या प्रशासन से संभव नहीं है, इसके लिए सामाजिक चेतना परम आवश्यक है । भारत मे वनरक्षण की सामाजिक परम्परा रही है एवं वन हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है । वनसंरक्षण में स्वयंसेवी अथवा गैर प्रशासनीक संस्थाओं की भी महती भूमिका होती है 'ग्रीन पीस' नामक संस्था जैसी अनेक संस्थायें अनेकों देशों में विद्यमान है । भारत में 'चिपको' आंदोलन, दक्षिण भारत में 'अप्पिकों' जैसी संस्थाएँ पर्यावरण संरक्षण हेतु जनजागृति में लगी हुइ है स्थानीय स्तर पर भी कई स्वयंसेवी संस्थाऐं बनी है । संरक्षण एवं वन विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है । स्थानीय ग्रामीणों की सहायता से प्रशासन द्वारा प्रारंभ किया गया कार्यक्रम 'सामाजिक वानिकी' कई प्रदेशों में पर्याप्त सफल हो रहा है, जिससे ग्रामीणों को लाभ हुआ व वनों का विकास की ओर एक कदम अग्रसर हुआ है ।

''मृदा संसाधन'' एवं ''जल संसाधन'' महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधनों में से है, जिनका संरक्षण मानवन जीवन हेतु अत्यंत आवश्यक है । मृदा के कटाव को रोकने हेतु तथा भूमि को संगठित रखने का सहज एवं सार्थक उपाय वृक्षारोपण है, मृदा संरक्षण के उपायों में महत्वपूर्ण है–पशुचारण पर नियंत्रण, बाढ़ नियंत्रण, उर्वरकों एवं खादों का प्रयोग, मृदा की उर्वरता का अनुरक्षण इत्यादि।

मृदा संरक्षण के उपायों हेतु गाँव–गाँव अनेक जनजागृति कार्यक्रम आयोजित किए जाते है । रेडियों, एवं दूरदर्शन पर भी इस संदर्भ में परिचर्चा इत्यादि आयोजित कर जागरूकता लाने का कार्य किया जा रहा है। भूमि विशेषज्ञ, मृदा विशेषज्ञ, भूमि उपयोग के ज्ञाता, स्वयं भूमि उपयोगकर्त्ता, अर्थात् किसान सामूहिक रूप से इस कार्य को सम्पन्न कर रहे है । भारत में अनेक भूमि सुधार कार्यक्रम सरकारी रूप में चल रहे है । किसानों में मृदा संरक्षण के प्रति जागृति लाने का महत्वपूर्ण कार्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा क्षेत्रीय सरकार की मदद से किया जा रहा है ।

'जल संसाधन' हमारे जीवन हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है इस पर न केवल मानव अपितु वनस्पति एवं संपूर्ण जीव जगत निर्भर है । जल संसाधन संरक्षण हेतु जल की उचित वितरण व्यवस्था, भूमिगत जल का विवेकपूर्ण उपयोग, वनस्पति विनाश पर नियंत्रण, जल प्रदूषण से बचाव, अपशिष्ट जल का शोधन इत्यादि उपाय सम्मिलित है । जल संरक्षण वर्तमान विश्व की आवश्यकता है । शासन द्वारा जल संरक्षण हेतु कई विज्ञापन प्रसारित किए जाते है, प्राकृतिक जल स्त्रोत जैसे कुएं इत्यादि को ढकवाना जिससे जलाक्षय कम हो। इस प्रकार के कार्यक्रम अनेक सामाजिक संस्थाओं द्वारा भी संचालित किए जा रहे है, जिससे कि भविष्य में जल की प्राप्ति को सुनिश्चित किया जा सकें ।

इसी प्रकार 'वन्य जीव संसाधन संरक्षण' हेतु अभ्यारण्यों की स्थापना, प्रदूषण एवं अन्य प्राकृतिक आपदा से वन्य जीवों की रक्षा, वन्य जीवों के शिकार पर रोक लगाना, वन्य जीवों का उचित प्रबंधन करना व अर्न्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर वन्यजीवों के संरक्षण हेतु जन चेतना जागृत करना आदि महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे है । अन्य प्राकृतिक संसाधन जैसे खनिज एवं ऊर्जा संसाधन के संरक्षण हेतु भी समुचित कदम उठाए गए है, क्योंकि शक्ति के वर्तमान संसाधन जैसे कोयला, खनिज तेल, जल विद्युत एवं अणुशक्ति है, जिन पर वर्तमान सभ्यता का विकास निर्भर है ।

इन संसाधनों के संरक्षण हेतु उपलब्ध खनिजों का विवेकपूर्ण एवं वैज्ञानिक रीति से उपयोग, व्यापार हेतु खनिजों के खनन पर नियंत्रण, खनन में आधुनिक विधियों का प्रयोग, खनिजों के सुरक्षित भण्डार एवं उपयोग को दृष्टिगत रखते हुए दीर्घकालीन योजना का निर्माण आदि महत्वपूर्ण कार्य किए जा रहे है । खनिज तेल (पेट्रोलियम) के संरक्षण हेतु समाज की भूमिका महत्वपूर्ण है । एक सभ्य एवं शिक्षित समाज द्वारा ही सम्पूर्ण संसाधनों का उचित दोहन की कल्पना सम्भव है । विभिन्न स्तरों पर शैक्षिक पाठ्यक्रम में भी पर्यावरण संरक्षण जैसे विषयों को सम्मिलित किया गया है क्योंकि शिक्षा जनचेतना को सशक्त माध्यम है । इस प्रकार प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में समाज की भूमिका दृष्टव्य है ।

आज विश्व के सभी राष्ट्र एक मत है कि संसाधनों का उचित उपयोग एवं संरक्षण आवश्यक है । इस संबंध में अनेक सम्मेलन होते रहते है, राज्य सरकार नियम बनाती रहती है, परन्तु वास्तव में जब तक यह जन आन्दोलन नहीं बन जाता प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण संभव नहीं हो सकता । प्राकृतिक संसाधन संरक्षण वर्तमान विश्व की प्रमुख आवश्यकता है । मूल तत्वों को नष्ट कर पृथ्वी पर रहना कठिन ही नहीं बल्कि

असंभव है । प्रकृति से विरासत में मिले बहुमूल्य संसाधनों को पूरी तरह समाप्त करने का हमें अकेले हक भी नहीं है ।

सन्दर्भ

1. *वशिष्ट, कमला, (2006), ''पर्यावरणी शिक्षण'', युनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा. लि., जयपुर*
2. *बरोलिया.ए., पाराशर राधिका, दुबे श्रीकृष्ण, ''पर्यावरण शिक्षा के नये आयाम'' राधा प्रकाशन मंदिर, प्रायवेट लिमिटेड*
3. *सिन्हा. मेघा (2007) ''पर्यावरण प्रदूषण'' वंदना पब्लिकेशनन्स, नई दिल्ली*
4. *शर्मा दीप्ति, कुमार महेन्द्र, (2009) ''पर्यावरण अध्ययन'' अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली*
5. *चक्रवर्ती पुरूषोत्तम भट्ट, (2007) ''पर्यावरण चेतना'', मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल*
6. *गोयल. एम.के. (2009) ''पर्यावरण प्रबंधन'', अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2*